

तेरी पलकें झुकी झुकी जो उठती है

आयुष आश्विन

कोई जादू सा असर हमपे करती है
क्या बताएं तू कैसी लगती है
जान तू जानशीन लगती है
तेरी बातों में न जाने कैसा जादू है
मेरी दिल को तेरी ही आरजू है
तेरी तिरछी झुकी नजरों का समां है
तेरी मदभरी ओठें जाम छलकती है
कोई जादू सा...

तू मिली तो हसीं हो गई
मेरी साम तेरे साथ रंगीन हो गई
तू है कोई साम-ए-ग़ज़ल
आयें मज़ा माय का पल-पल
दिल में है तेरे चाहत की हलचल
तेरा हसीं चेहरा जैसे खिला कमल
तेरा तन चमन तू खुशबू बिखरती है
कोई जादू सा...

तेरे लिए मेरा दिल जन हाजिर
तू मेरे ख्वाबों की तामीर
तेरे ख्याल में डूबा मेरा हर लम्हा
तेरे बिना मैं तो रहा तन्हा
तू जो मेरे रु- ब-रु है तो बाकि क्या गुफ्तगू है
तेरी आँखें सों बातें कह जाती है
कोई जादू सा...

तेरा हर बातों पे मुस्कुराना
तेरी मुझसे नजरे मिलाना
जाने क्यों दिल लुभाता है
मन तेरे ख्वाबों में खो जाता है
तुझसे मिलके आयें दिल को सुकून
हर साम तेरा मैं इंतज़ार करूँ
तेरे ख्वाब हमें सारी रात जगाती है
कोई जादू सा...